# जयशंकर प्रसाद का सांस्कृतिक - दर्शन

(डा सरिता)

शोध सारांश

हिन्दी साहित्य की छायावादी काव्यधारा में जयशंकर प्रसाद का सांस्कृतिक दर्शन मूल रूप से आध्यात्मिक, राजनीतिक और मानवतावादी वचारधाराओं की आधारभू म पर है । प्रसाद जी बुद्ध की करूणा और शैवागम से अ धक प्रभा वत रहे हैं । इस लए वे अहिंसा, दया, समरसता, स्थितप्रज्ञा, प्रत्य भज्ञा और भौतिकवाद के अतिरिक्त सामाजिक - संस्कति के व वध कारकों की ओर अ भमुख रहे । अतीत की उदात्त सांस्कृतिक, ऐतिहा सक और पौरा णक संस्कृति के संदर्भ आज भी हमारे जीवन में न केवल प्रासां गक हैं, अ पतु संस्कृति के नवीन उन्मेशों का निर्माण भी करते हैं । जयशंकर प्रसाद ने सुख, सौंदर्य और अतीत की स्व र्णम स्मृतियों को आधार या मानक मानकर अपने सृजन कार्य में मनुश्य के जीवन दर्शन की स्थापना की है । जहाँ भी इनके प्रगीतों में व्यक्तिवादी स्वर दिखाई देता है, वह भी उदात्त रूप होने के कारण भारतीय दर्शन संस्कृति और ऐतिहा सक चेतना का निर्वाह करता हैं । प्राचीन संस्कृति और ऐतिहा सकता के अवयवों को युगानुरूप परिवर्तित करके ही जीवन मूल्यों की स्थापना की जा सकती है । इस लए जयशंकर प्रसाद का सांस्कृतिक दर्शन उदात्त एवं मानव जीवन का पर्याय है ।

Keywords: संस्कृति का स्वरूप, सांस्कृतिक अवधारणा, भारतीय सांस्कृतिक दर्शन का तुलनात्मक रूप, संस्कृति - दर्शन का वै वध्य रेखांकन ।

'संस्कृति ' शब्द एक अत्यंत व्यापक शब्द है । संसार में जो भी उ चत है, उसे ग्रहण करना या उससे अपने आप को परि चत कराना इसकी व्यापकता के संदर्भ हैं । संस्कृति शाब्दिक और भावपूर्ण अर्थों को देखें तो शाब्दिक रूप में इसका अर्थ संस्कार, सुसंस्कृत है, वहीं भावपूर्ण रूप में यह परिश्कृत करने से है । ' संस्कृति है क्या? शब्दकोश उलटने पर इसकी अनेक परिभाशाएँ मलती हैं ।

एक बड़े लेखक का कहना है क संसार भर में जो भी सर्वोत्तम बातें जानी या कही गयी हैं, उनसे अपने आप को परि चत करना संस्कृति है । एक दूसरी परिभाशा में कहा गया है क संस्कृति शारीरिक या मान सक शक्तियों का प्र शक्षण, दृढिकरण या वकास अथवा उससे उत्पन्न अवस्था है । यह मन आचार अथवा रू चयों की परिश्कृति या शुद् ध है । यह सभ्यता का भीतर से प्रका शत हो उठना है । समाज की व वध संस्कृतियों ने ही मानव संस्कृति का निर्माण कया है ।साहित्य और संस्कृति का संबंध प्रगाढ़ होता है । साहित्यकार अपने सामाजिक - सांस्कृतिक बोध के कारण ही अपने सृजन कार्य को संवेदनात्मक रूप दे पाता है । हिन्दी साहित्य में छायावाद को सांस्कृतिक चेतना के उत्स के रूप में जाना जाता है ।

सभी छायावादी क वयों में मानव संस्कृति का दर्शन दिखाई देता है । क व व नाटककार जयशंकर प्रसाद में यह वशेश रूप में दिखाई देता है । वे भारतीय संस्कृति के पोशक और उद्गाता हैं । भारतीय संस्कृति के अतीत का गान जिसमें शक्ति, समृद् ध और औदात्य का स्वर है उसे मात्र कथ्य की प्रस्तुति के लए नहीं करते हैं. अ पतु ये भारतवर्श में उस सांस्कृतिक जागरण का उद्घोश करते हैं जो भारतीय मनी शयों ने मानव मूल्यों के संरक्षण के लए स्था पत कया है| आध्यात्मिकता, वश्वबंधुत्व, नैतिकता, समन्वयशीलता, कर्मण्यता, त्याग, ब लदान, संयम,

देशभक्ति एवं राश्ट्रीयता आदि सांस्कृतिक तत्व प्रसाद की नाट्कृति जनमेजय का नागयज्ञ ' जो पौरा णक युग से संबं धत है, से लेकर राज्यश्री ' तक जिसमें हर्शवर्धन काल की संस्कृति का उत्कर्श है. उल्लेख है ।

जयशंकर प्रसाद एक साथ नाटक, क वता, उपन्यास और कहानी में भारतीय संस्कृति की मान्यताओं को अपने पात्रों और रूपों के माध्यम से प्रस्तुति देते हैं । हिन्दी साहित्य की आधुनिक काव्यधारा में छायावाद संस्कृति सचेतक है, इस समय क वता का स्वर राश्ट्रीय और सांस्कृतिक चन्हों से नि र्मत हुआ है । राश्ट्रीय आन्दोलन के कारण यह तात्कालीन आवश्यकता भी थी । संस्कृति की उपादेयता समाज की पारिस्थिकी और भोगौ लक जरूरतों पर निर्भर करती है ।

संस्कृति के यही आधार और कारक जयशंकर प्रसाद के साहित्य में दिखाई देते हैं भारतवर्श की वशेशता सांस्कृतिक व्यवहारों में सम्मि लत है । कर्मण्यता, साहस और देशानुराग की यह भावना जयशंकर प्रसाद व वध पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं । मानव दर्शन और उसकी समृद् ध की श्रेश्ठता जन - संस्कृति पहचान है - प्रसाद के साहित्य में भारतीय संस्कृति के सभी पहलू हैं । इनके साहित्य में जीवन की आसक्ति का दर्शन है । इसी से ही समाज मानव संस्कृति को संयोजित कर पाने में सफल हो पाता है । भारतीय दर्शन जीवन की सृजनात्मकता का रूप है, जड़ और चेतन दोनों स्थितियों में जीवनासक्ति के दर्शन होते हैं छायावाद भौतिक संस्कृति का वरोध करता है । यह आनन्द अ भमुख है और इसका आधार मानव धर्म अर्थात् उसके कर्तव्य हैं । स्थिरप्रज्ञ मनुश्य के मन में वकारों का शमन करता है और वह उन अवयवों को पुनर्जीवन देता है जिससे मानव सुख की. प्राप्ति होती है। भाग्य, देव, प्रारब्ध, अदृश्ट, नियति आदि को प्रसाद के साहित्य में जीवन के परिवर्तित दृश्टिकोणों से देखा जा सकता है । मनुश्य में राश्ट्र - प्रेम का भाव उसके प्रारब्ध को प्रौढ़ बनाता है । सांस्कृतिक राश्ट्रवाद मानवता की गहन सामाजिकता और साधना का प्रतिफलन है । ' पुरस्कार ' कहानी में मधू लका व्यक्ति प्रेम को राश्ट्र - प्रेम पर न्यौछावर कर देती है । जयशंकर प्रसाद जीवन मूल्यों की अ भव्यक्ति पर बल देते हैं । वश्व को खुशहाल देखना भारत की संस्कृति का श्रेश्ठ पक्ष है । समन्वयता एवं समरसता का दर्शन ' वसुधैव कुटुम्बकम ' की संस्कृति का आग्रह करता है।

भारतीय संस्कृति में कर्म और पुरुशार्थ के महत्व पर बल दिया गया है । कर्म प्रधान समाज ही भ वश्य में नवनिर्माण कर पाने में समर्थ होता है । हताशा और निराशा का क्षरण कर्म से ही संभव है । सांस्कृतिक प्रतिबद्धता कर्म से ही समृद्ध होती है । नियति और भाग्य इसी से ही अपने स्वरूप को पाते हैं । प्रसाद के काव्य में इसी कर्म और पुरूशार्थ का औदात्य दृश्टिगत होता है।

जयशंकर प्रसाद निश्काम कर्म के प्रस्तोता हैं । ' स्कन्दगुप्त ' नाटक इसी दर्शन पर आधारित है । नायक का सारा प्रयोजन और क्रया - व्यापार अपने कर्तव्य का पालन करने और निश्काम भाव से मानव पथ पर चलना है । निराशा के क्षणों में कमला उसे जीवन दर्शन बताती हैं।

प्रसाद का नाट्य साहित्य भारतीय संस्कृति का उद्घोश है । उदात्त मानवीय मूल्यों की अ भव्यक्ति भारत के गौरवमयी अतीत का गान करती है । मानव अस्तित्व की रक्षा करना राश्ट्रीय संस्कृति की भावना को बढ़ावा देता है । जन साधारण में देश - प्रेम और उसकी रक्षा का संस्कार प्रसाद जैसे नाटककार ही सन्नद्ध कर सकते हैं । नारी पात्रों को गर्व से भरकर उनकी शक्ति का और ऊँचाई प्रदान कर देते हैं । ' चन्द्रगुप्त ' नाटक का प्र सद्ध गीत अलका ही गाती है। संस्कृति में उन कारकों का निशेध आवश्यक है जो मानव सृश्टि के नियामकों के लए घातक हैं

। संस्कृति का संरक्षण संभव है जब अहित के कुचक्र को जाना जाये। करूणा और उदारता का दर्शन प्रसाद के पूरे साहित्य में देखा जा सकता है । यह भारतवर्श की संस्कृति का उज्ज्वल पक्ष है । भावुकता, संवेदनशीलता, सहिश्णुता, ववेकशीलता इसी उदारता और करूणा का ही परिणाम है । जयशंकर प्रसाद पर बौद्धों की करूणा का गहरा प्रभाव रहा, इस लए उनके साहित्य में बौद्धों का सांस्कृतिक उत्कर्श है । बौद्ध दर्शन का मूल आधार अहिंसा है ।

अन्य धर्मों और मतों में भी अहिंसाका उल्लेख है । गोस्वामी तुलसीदास जब ' पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ' कहते हैं तो वे अहिंसा को ही महत्व देते हैं । अहिंसा भारतीय जन - संस्कृति के कण - कण में व्याप्त है । स्वयं महात्मा गांधी अहिंसा के पोशक रहे

उनके द्वारा कहा गया कथन -हिंसा के द्वारा मला स्वराज्य कभी स्वीकार नहीं करूँगा । कहने का तात्पर्य है जयशंकर प्रसाद के सामने अहिंसा के दर्शन की परम्परा का अनुकरण रहा है, इस लए अपने सृजन कार्य में वे इसे और प्रभावी बनाते हैं

इसी नाटक की नायिका कार्ने लया भारतीय संस्कृति से बहुत प्रभा वत है । भ्रातृत्व और सहयोग की भावना के अतिरिक्त भारतीय दर्शन मीमांसा उनके अवचेतन का हिस्सा बन चुकी थी। निश्चित रूप से भारतीय परिवेश में आकर कोई भी वदेशी अपने आप को धन्य समझता है । यहाँ भौतिकता से अ धक अध्यात्म और मानवता का संरक्षण है, इसके बिना भारत को समझा नहीं जा सकता । आस्था और धर्म को मानवता के परिप्रेक्ष्य में प्रसाद के सृजनात्मक सौंदर्य की सृश्टि करता है । मुश्किल समय में यही अवलम्ब हमें असहाय होने से बचाता है । स्कन्दगुप्त ' नाटक में क व मातृगुप्त केवल ईश्वर को ही अवलम्ब मानकर मनुश्य के कश्टों को दूर करने की वनती करता है। ' अशोक की चन्ता ' में भी करूणा का यही भाव निःसृत हुआ है । क लंग युद्ध में हुए रक्तपात के पश्चात अशोक का हृदय करूणा से भर जाता है। प्रसाद का सांस्कृतिक दर्शन आधुनिक युग में कतना प्रासं गक है, यह कहना कठिन है । इसका कारण यह है क यदि भोगौ लक तरीके से यदि पारिस्थितिकी परिवर्तन आता है । प्रकृति के वकास की यही प्र क्रया होती है। जयशंकर प्रसाद जागरण और नवनिर्माण के क व हैं । मानव सृष्टि की उत्प त्त और जीवन की सार्थकता उनकी दार्शनिकता का आधार रही हैं । भोगवादी संस्कृति जन - संस्कृति को कस प्रकार नश्ट करती है, इसे व्यापक रूप में बताने का उद्देश्य ही यही है क वे मानवतावाद के संरक्षण पर बल देते हैं

जयशंकर प्रसाद संस्कृति को एकरेखीय नहीं मानते. उनका सामाजिक और सांस्कृतिक दर्शन बहुरेखीय है । उनके साहित्य का प्रत्येक शब्द वर्गीकृत रूप में सांस्कृतिक है और वह उसी से भारतीय संस्कृति की पौरा णक पारिस्थितिकी का दृश्टान्त प्रस्तुत करता है! क व प्रसाद संस्कृति के मथकीय रूपों का सृजन मानवता के लए करते हैं । आधुनिक क वयों ने हिन्दी साहित्य को नवीन वशय और भाशा के नये ढाँचे से नि र्मत कया है तो जयशंकर प्रसाद ने इसके साथ - साथ संस्कृति के नवीन बिम्बों से सौंदर्य का वधान खड़ा कया है । अपने पूरे साहित्य में इन्होंने भारत के गौरवमयी अतीत के सार्थक चत्र प्रस्तुत कए हैं । ' शैव दर्शन ' के अन्तर्गत आने वाले प्रत्य भज्ञा दर्शन ने जयशंकर प्रसाद को अ धक प्रभा वत कया, इसी कारण संसार की सत्यता, आनन्द और

मरसता की उपस्थिति इनके साहित्य में दिखाई देती है ।

आज के परिप्रेक्ष्य में जयशंकर प्रसाद का सांस्कृतिक दर्शन न केवल वमर्श का वशय है, बल्कि धारण का वशय भी है । वश्व की सभी सभ्यताएँ भारतीय संस्कृति से प्रभा वत रही हैं और ऐतिहा सक दृश्टि से भी इन सब का

उल्लेख मलता है । अतः जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी साहित्य में अनेक सांस्कृतिक मान्यताओं को स्था पत कया जिनका अनुकरण भारत ही नहीं, अ पतु पूरा वश्व निरन्तर रूप से कर रहा है ।